श्री कृष्ण जन्माष्टमी

कृष्णा आईयां वे , आईयां वे सुन बंसी दी तान।। टेक।।
तट यमुना ते शाम मुरारी, खेल करत है नन्द बिहारी।
प्रेम ने पाईयां फाईयां वे, आईयां वे ... ...

प्रेम तेरे दी अजब कहानी, कूक रही हाँ जानी।
पुछ– पुछ थकियां रहियां वे, आईया वे ... ...

भोला– भाला मुख दिखला दे, जिगर मेरे दी जलन बुझा दे।
प्रेम ने झड़िया लाईयां वे, आईया वे ... ...

आ प्रीतम मैं सगन मनावां, किस विध तेरा दर्शन पावां।
डाडी मैं घबराईयां वे,आईया वे ... ...

मैंनू " दासनदास " बनाके, बैठ गये हो मुख छिपा के।
कर दे माफ़ खताईयां वे, आईया वे ... ...

आ शामा विच वस जा अखियाँ खाली रखियां वास्ते तेरे।। टेक।।

कमलियां हो – हो कूकां मारां, होके दयालु लै जा सारां।
मुढ़ तों झगड़े तेरे मेरे, खाली ... ...

जल अखियां दा सुक गया सारा, विरहा अगन ने सब तन जारा।
दुखियां होइयां साझ – सवेरे, खाली ... ...

आसन तेरा चिर तों खाली, आ इक वारी घर दे वाली।
अखियां देखन चार चौफ़ेरे, खाली ... ...

इस घर ते जो क़ब्ज़ा करदे, नाम तेरे नूं सुन– सुन डरदे।
जो खुश रहन्दे विच अन्धेरे, खाली ... ...

" दासनदास " दी ए अरजोई, इस विच तेरा हर्ज न कोई।
नित दुःख देंदे पाँच लुटेरे, खाली ... ...